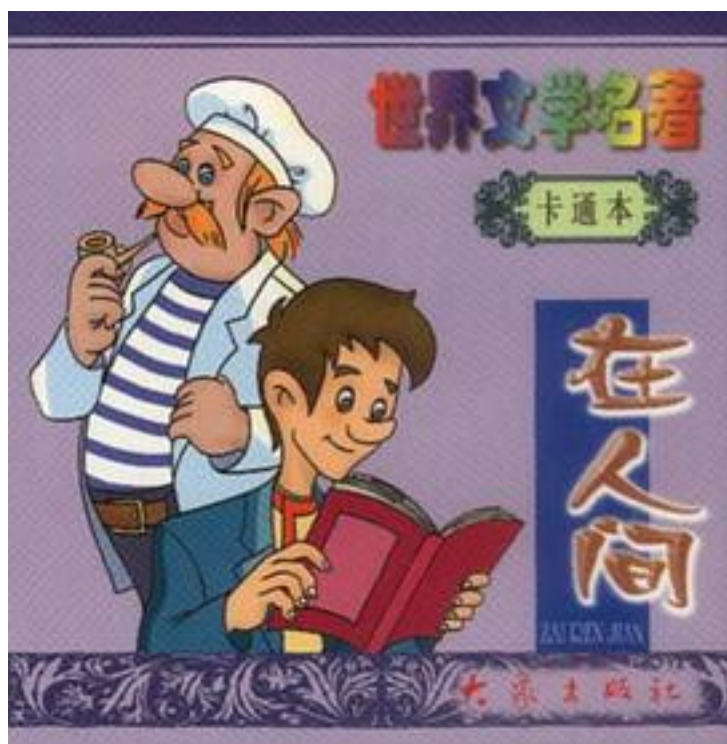


在人间



[在人间_下载链接1](#)

著者:[苏联] 马克西姆·高尔基

出版者:中国少年儿童出版社

出版时间:2003-05

装帧:精装

isbn:9787500764670

《在人间》描写的是小阿廖沙在度过苦难的童年之后初涉社会人生的那一段生活。高尔基以纯熟的现实主义手法把社会底层的真实生活揭示给每一位读者，让压抑、沉重，包括很多鄙俗的社会现实一览无遗地展现在读者面前。他刻画出的一个个人物形象都是那样地栩栩如生；善良的外祖母神圣得像圣母再世一般，吝啬刻薄的外祖父令人可气又可怜，嫉恶如仇的轮船厨师斯穆雷粗俗中却透着本原的正直，熟知宗教古董的彼得对所有的人都是那样的狡猾奸诈，裁缝妻子为沉重压抑的生活带来了一丝温馨……

作者介绍:

目录: 编者说明
初涉人间 感悟人生——译本序

一	
二	
三	
四	
五	
六	
七	
八	
九	
十	
十一	
十二	
十三	
十四	
十五	
.....	
• • • • •	(收起)

[在人间_下载链接1](#)

标签

俄国文学

评论

[在人间_下载链接1](#)

书评

说实话，这是个很没有想法的标题，因为我实在想不出什么标题。我还记得看完这本书时候我的震撼和那滔滔不绝的感想。只是已经过去快半年了，太多太多我已经忘记具体内容。

我一直都说，我是一个健忘的人。就是自己想了很久的话，也会随着时间遗忘。所以再好的作品，再入我心的句...

在人间,在路上...人生的旅途....没有回程的票....人间路上...怎么办？

《在人间》描写的是小阿廖沙在度过苦难的童年之后初涉社会人生的那一段生活。高尔基以纯熟的现实主义手法把社会底层的真实生活揭示给每一位读者，让压抑、沉重，包括很多鄙俗的社会现实一览无遗地展现在读...

在这以前我从未读过高尔基的任何长篇作品，除了那个意识形态浓重的《海燕》。因为我总感觉，被社会主义大肆吹捧的作家肯定没啥好东西。那个尼古拉奥斯特洛夫斯基就是如此。或许是最近精虫上脑的缘故，连续下载了高尔基的三部长篇著作《我的大学》《童年》《在人间》，其阅读顺...

如火的热情，似水的叙事 评《在人间》

《在人间》是高尔基自传体小说三部曲中的第二部。在这部小说中，描述了主人公阿廖沙1871年到1884年的生活。年轻的阿廖沙也只有15岁，这是他正式走上社会，工作阶段的生活...

我是在上大学之后才开始疯狂的爱上阅读的，所以说以前新课标必读什么的书，我都不会去碰，对于高尔基本人可能被高度评价之后我便有一种望尘莫及，望之却步的感觉，对经典而言我以前的态度是能避开就避开的，可想而知以前是多么愚昧无知，但是我现在也知道了，对于读书这种事...

——“世界上只有一种真正的英雄主义，那就是认清生活的真相后依然热爱生活。”

《在人间》（В

людях）首版于1916年，讲述了主人公阿廖沙（Алёша）少年时期的故事，阿廖沙11岁开始进入社会谋生，亲身体会了当时俄国社会底层人民的生活状态。

马克西姆·高尔基（Maxi...

“我”来到了人间，丑恶的社会出现在读者的眼前。如果说《童年》还只是局限于自我以及家庭中的人与事的话。此书已经把视野扩展到了社会，虽然主要是社会的底层。在文中我们看到了人间的一切，可以说大多是丑恶的。可是这种丑恶却让人厌恶不起来，因为他们也需要活下去。如同结...

讲述高尔基11岁之后做工的故事。描述了做工过程中遇到的各色人物。通过人物的性格表现了当时的社会现状。
书中的许多人被老板，包工头，甚至同一阶层的同伴侮辱，他们却是不加反抗，任由屈辱加身也不去反抗，只是一味的默默忍受。日复一日空洞的生活使得大部分人，通过侮辱人、...

许多书，初读不解其中意，再读又是一番风味。重看之时，字字句句如同作者丢下的香蕉皮，我一脚踏上去，连同自己的思绪，不知滑向何处。
在人间的生活实在要比本来就不太快乐的童年生活要更加痛苦些。书中倒没有太多描写阿廖沙心中悲伤的情节，只是常常能看到“忧伤”、“可怜”...

这本书以第一人称展开故事叙述，作者以阿辽什卡的视角去看待一切，思考一切，具有强烈的代入感，拉近与读者的距离，并且通运用多种手法，塑造了众多不同形象的人物，多种表达方式和描写手段的运用，使人物形象更加突出，爱憎分明。
尽管环境依然恶劣，接触的人物形形色色，来到...

在这本书中，高尔基讲了自己丰富的人生经历，对于书的看法，在整本书中自觉不自觉的在对于自己遇到的人进行一些判断，而对于那些能让自己收获较多的人印象深刻尤其是厨师和司炉工以及文物鉴定老者和奥西普，我感觉应该还有他的主人，也就是他的外祖母的妹妹的儿子（我算不来高...

和小姑娘道别时，我请求她：

“你告诉妈妈，说哥哥非常感激她，非常！非常！你会帮我对她说吗？”

“我说，我一定说！”她天真可爱地微笑着答应了我的请求，“明天再见，是吗？”

令人心痛的文字

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	5
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	---

现在能记起来的东西很少了，不过这本书很好地刻画了当时的社会，原来不同的国家的生活方方面面都是很相似的。世界上没有净土，也从来没有过“the good old

days”。争斗、较量本来就是人类社会的常态。

只要是自己认为是真理，就不会管别人的想法`可以走自己的路，

不会因为困难就停此不前 只有有着坚强的毅力和勇气 才能面对人生这本书~~!

鄙人一直受教科书蒙骗，对此人保持着极大的崇敬。乃至多年后的几天才发现其本质与郭沫若别无二样，心灵受到了极大的创伤。

事情是这样的：鄙人看一本书叫做第三帝国的兴败The Rise and Fall of the Third Reich

然后对极权主义的起源进行回顾 于是我看到了这样一句话：{The i...

[在人间_下载链接1](#)